वो चुड़ैल

जिसने अपनी बिल्ली खो दी

मैरी कैलहौन

चित्र: ट्रिंका हेक्स नोबल

फलिंडा, उपचार करने वाली चुड़ैल ने अपनी बिल्ली छाया खो दी है - उसकी चिकनी, काली "बुद्धिमान बिल्ली."

छाया उसकी सबसे करीबी साथी थी. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चुड़ैल कहाँ घूमती थी, घमंडी बिल्ली उसके बगल में घूमती थी - घास के मैदान के पार जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने के लिए, गाँव में अपने मरीजों की देखभाल करने के लिए. लेकिन फिर एक दिन फलिंडा ने खुद को अकेला पाया.

वो चुड़ैल जिसने अपनी बिल्ली खो दी

मैरी कैलहौन

चित्र: ट्रिंका हेक्स नोबल

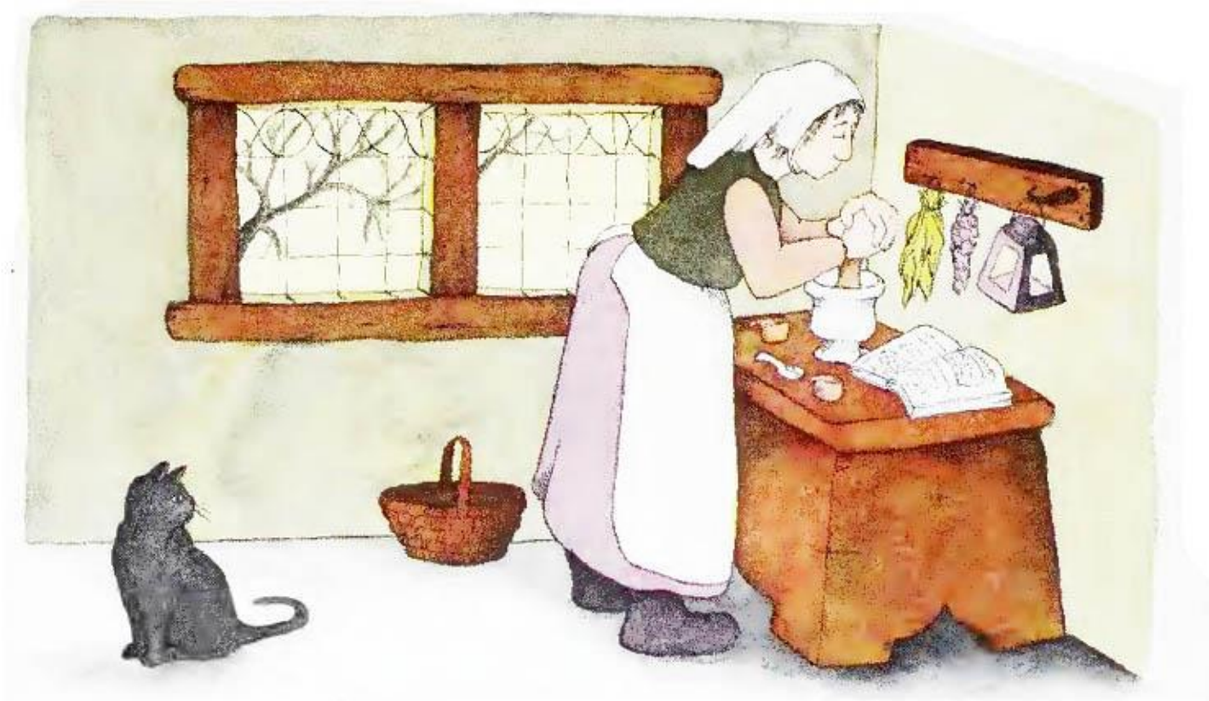

एक बार एक चुड़ैल थी जिसकी छाया नाम की बिल्ली खो गयी थी. वो एक सफ़ेद चुड़ैल थी जो केवल अच्छे काम ही करती थी, वो अपनी जड़ी-बूटियों की दवाइयों से लोगों का उपचार करती थी. उसका नाम फलिंडा था.

फालिंडा की एक काली बिल्ली थी - छाया, एक घमंडी बिल्ली, एक चुपचाप चलने वाली बिल्ली. जहाँ भी चुड़ैल घूमती, छाया उसका पीछा करती थी. बिल्ली उसकी सबसे प्रिय मित्र थी.

बिल्ली फलिंडा की गोद में नहीं सोती थी. वो म्याऊँ करती थी. जब फलिंडा उसकी पीठ सहलाती थी तो वो उसके हाथ से फिसल जाती थी. फिर भी फालिंडा जहां भी जाती, उसकी बिल्ली छाया उसके पीछे-पीछे होती थी.

जब चुड़ैल सर्दी के इलाज के लिए गुलाब के फूल और तिपतिया घास इकट्ठा करने के लिए घास के मैदान में जाती, तो छाया उसका पीछा करती. वो घास में चलते हुए, चूहे पर झपटती और उसे खा डालती.

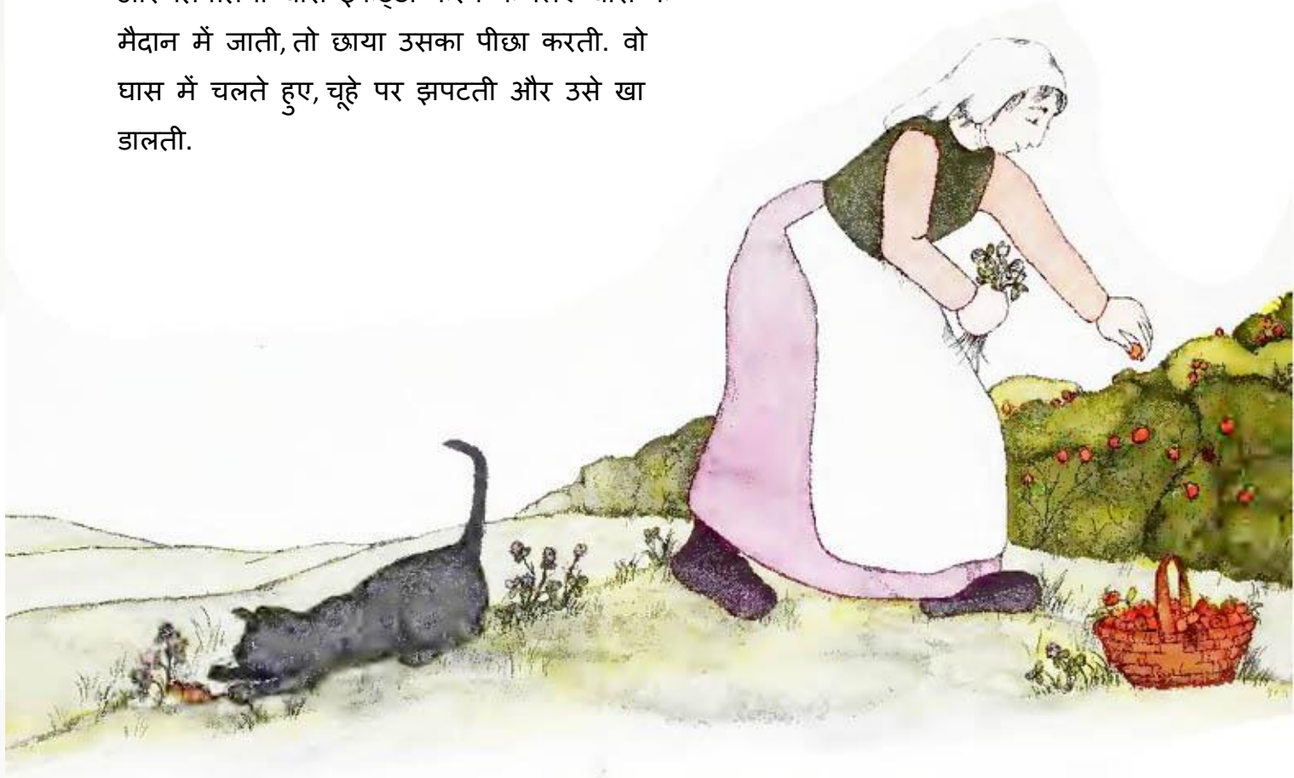

जब फालिंडा नदी पार, जलन और खुजली की दवाएं इकट्ठी करने जाती तो छाया एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर छलांग लगाती हुई उसके पीछे चलती. वो अपने गीले पंजों को हिलाती.

जब सफ़ेद चुड़ैल अपनी दवा की टोकरी गाँव में लेकर जाती, तो छाया उसका पीछा करती और उसकी एड़ी पर कदम रखती. जब चुड़ैल कुटिया के अंदर किसी का उपचार करती होती, तो बिल्ली दरवाजे पर बैठकर उसका इंतजार करती.

तभी बच्चे बिल्ली के काले कूबड़ की ओर इशारा करते हुए कहते, "देखो, वो चुड़ैल की बिल्ली छाया है."

रात में बिल्ली फलिंडा को छोड़कर चली जाती थी. अँधेरे में वो अकेली काली बिल्ली जंगल में घूमती थी. सुबह की रोशनी में वो चुड़ैल के दरवाजे पर वापिस आती थी. उसकी आँखें गोल और पीली थीं, और वो कहती थी, "माँ-वाह!"

फिर एक दिन बिल्ली सुबह को नहीं आई. सूरज की तेज़ रोशनी में कोई भी काली बिल्ली, चुड़ैल के दरवाज़े पर आकर नहीं बैठी.

"अरे बिल्ली. तुम कहाँ हो मेरी छाया!" फलिंडा ने अपनी कुटिया के चारों ओर, घास के मैदान में, और वापस जंगल में जाकर अपनी बिल्ली को पुकारा.

लेकिन कोई भी बिल्ली उसके पास नहीं आई, किसी भी बिल्ली ने उसका पीछा नहीं किया, कोई भी बिल्ली उसके पीछे-पीछे नहीं चली. अब चुड़ैल की बिल्ली छाया उसे छोड़कर चली गई थी. चुड़ैल ने बहुत अकेलापन महसूस किया जैसे कोई सूखा पत्ता उड़ रहा हो.

"वो किसी लंबी यात्रा पर गई होगी," उसने खुद से कहा, "वो ज़रूर वापस आएगी."

उस रात चुड़ैल अपने दरवाज़े पर खड़ी हुई और उसने अंधेरे में पुकारा, "यहाँ, आओ मेरी बिल्ली. मेरी, छाया!"

लेकिन रात में कोई भी काली बिल्ली वहां नहीं आई.

अगली सुबह, चुड़ैल जंगल में गई और उसने आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी कीं. उसने पुकारा, "यहाँ, आओ मेरी बिल्ली. मेरी, छाया!" यह सोचकर कि शायद बिल्ली रास्ता भटक गई हो. लेकिन किसी भी काली बिल्ली ने उत्तर नहीं दिया, "माँ-वाह!"

घर लौटकर उसने लकड़ियां नीचे रख दीं, लेकिन उसने आग नहीं जलाई. फलिंडा ठंडे चूल्हे के पास अपनी गोद में हाथ रखकर बैठ गई.

आहत होकर उसने कहा, "बुरी बिल्ली! अब वो मेरे घर नहीं आना चाहती है."

तीसरे दिन, फलिंडा गाँव की ओर चली और उसने लोगों से पूछा, "क्या किसी ने मेरी बिल्ली देखी है?"

किसी ने उसकी बिल्ली नहीं देखी थी. एक बच्चे ने उसे अपना काला और सफेद बिल्ली का बच्चा देना चाहा लेकिन फलिंडा ने अपना सिर घुमा लिया. "कोई भी बिल्ली मेरी छाया की जगह नहीं ले सकती है," उसने कहा.

सफ़ेद चुड़ैल केवल उपचार करना जानती थी. वो खोई हुई बिल्ली को बुलाने वाला कोई जादुई मंत्र नहीं जानती थी. वो जंगल में अपने घर वापस चली गई, लेकिन उसके पीछे-पीछे कोई बिल्ली नहीं आई.

"मेरी बिल्ली चली गई है," उसने कहा, "शायद वो मर गई हो." उसकी आँखों में आंसुओं के अलावा और कुछ नहीं था.

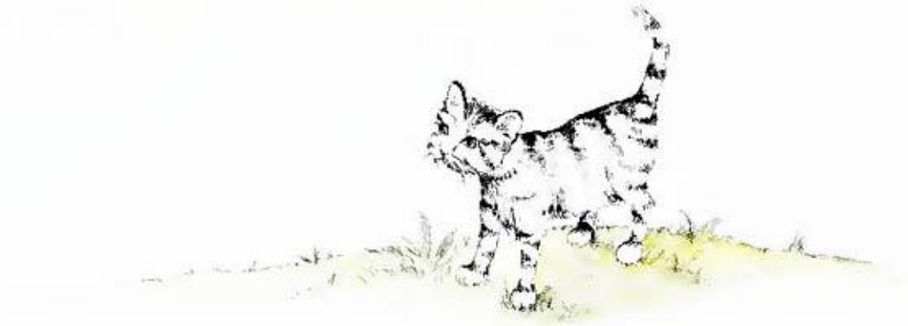

फिर., "प्र्र-वाह?" किसी रोएँदार चीज़ ने उसके पैर को छुआ.

"छाया!" चुड़ैल चिल्लाई.

लेकिन जब उसने अपने आंसुओं में से देखा, तो एक चिकनी काली बिल्ली के बजाए, फालिंडा ने एक बिल्ली का बच्चा देखा, जिसकी काली धारियां और स्पष्ट भूरी आँखें थीं.

“प्र्र!” युवा बिल्ली एक कदम कूदी.

"चली जाओ!" फालिंडा ने नाचती हुई बिल्ली को लात मारी. "तुम मेरी छाया नहीं हो."

अगले दिन बिल्ली का बच्चा तो चला गया, लेकिन गाँव से बच्चे आये. वे सभी अपनी-अपनी बिल्लियाँ लेकर आये. काली बिल्लियाँ, पीली बिल्लियाँ, भूरे बिल्लियाँ, केलिको बिल्लियाँ. बिल्लियों ने फुसफुसाहट की, वे छटपटाने लगीं और उन्होंने बच्चों की बाहों में गुर्राना शुरू कर दिया.

"प्रिय चुड़ैल," बच्चों ने कहा. "आप इनमें से एक नई बिल्ली चुन लो!"

फलिंडा उदास होकर मुस्कुराई. "नहीं, धन्यवाद. मुझे खेद है. मुझे अपनी बूढ़ी बिल्ली ही चाहिए."

उस पूरे दिन वह जंगलों, घास के मैदानों और नदी के उस पार खोजती रही, भले ही उसे यकीन था कि उसकी छाया मर चुकी थी. किसी जानवर ने बिल्ली को मार डाला होगा नहीं तो बिल्ली उसके पास ज़रूर वापस आती.

जब वो घर पहुंची, तो उसके दरवाजे पर भूरे रंग की धारियों वाला बिल्ली का बच्चा था. उसके पंजे उसकी छाती के नीचे दबे हुए थे, और उसकी भूरे रंग की आंखें उसके चेहरे पर बाघ की तरह चमक रही थीं.

"मुझे कोई नया दोस्त नहीं चाहिए!" फलिंडा ने रोते हुए कहा. "मैं तुम्हें नहीं खिलाऊंगी. तुम यहाँ से चली जाओ!"

सफेद चुड़ैल अपने घर में चली गई और उसने दरवाजा बंद कर लिया.

अगली सुबह बिल्ली का बच्चा अभी भी उसके दरवाज़े पर था.

"तुम्हें बहुत भूख लगी होगी," फलिंडा ने कहा. उसने दूध का कटोरा नीचे रख दिया. लेकिन जब बिल्ली ने दूध पी लिया, तो फालिंडा ने अपना एप्रन झाड़ा और कहा, "चलो! अब जाओ!" लेकिन बिल्ली घर के एक कोने में भाग गई.

उस रात हवा पेड़ों के बीच से होकर घर की ओर बहने लगी. तेज हवा और बारिश के बीच एक बिल्ली चिल्लाई, "म्याऊं-म्याऊं."

फलिंडा ने धारीदार बिल्ली के लिए दरवाज़ा खोला. "ठीक है, अंदर आओ," उसने कहा. "आज रात आग के पास सो जाओ."

लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ा. कोई भी बिल्ली उसकी पुरानी बिल्ली छाया छाया की जगह नहीं ले सकती थी.

अगले दिन वो चुड़ैल अपनी टोकरी लेकर जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने के लिए निकली.

"आओ, अगर तुम्हें मेरे साथ आना चाहो तो," चुड़ैल ने कहा.

भूरी आँखों वाली बिल्ली केवल दरवाज़े पर बैठी रही और वो चुड़ैल को जाते हुए देखती रही.

"अच्छा, तुम मेरे पीछे-पीछे नहीं आओगी!" फ़लिंडा चिल्लाई. "तुम केवल एक घरेलू बिल्ली हो. तुम मेरी छाया नहीं हो!"

नदी के किनारे घास के मैदान और दलदल में अकेले चुड़ैल ने अंजीर, पेनिरॉयल, जंगली लहसुन और केले चुने. जब वो सूर्यास्त के समय अपनी झोपड़ी में वापस गई, तो दरवाजे पर बिल्ली खड़ी थी. वो उसकी राह देख रही थी. उसके बगल में एक मरा हुआ चूहा था.

युवा बिल्ली ने उसे अपने पंजे से आगे बढ़ाया. "मिआऊं!"

फलिंडा मंद-मंद मुस्कुराई. "एक उपहार? धन्यवाद. अब तुम उसे खाओ."

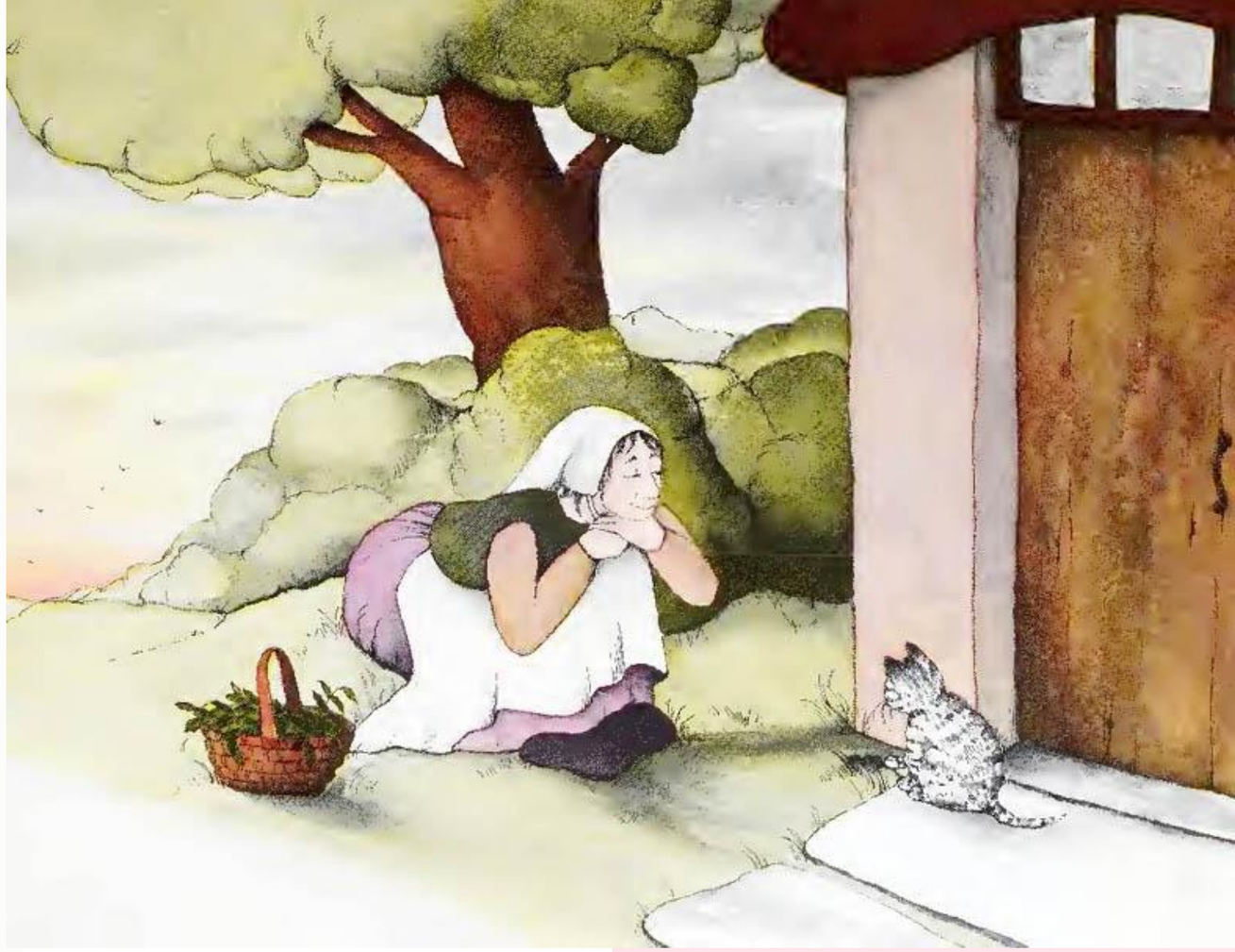

उस रात सफेद चुड़ैल ने जब आग में देखा तो उसे अपनी दुबली काली बिल्ली की याद आई. एक भूरे रंग का पंजा ऊपर उठा और उसने उसकी बांह को छुआ, लेकिन उसने उसे झटक दिया.

फिर भी उसने बिल्ली को रहने दिया. बिल्ली का बच्चा भूरे और काले रंग की तितली की तरह घर में घूमता रहा, उसने अपनी काली रिंग वाली पूंछ को अपने पैरों के चारों ओर लपेटा और कहा "मिआऊं!" फालिंडा ने कंधे उचकाए और दूसरी ओर देखा.

फिर भी जब भी चुड़ैल घर आती थी तो भूरी आँखें उसका इंतज़ार कर रही होती थीं, और अक्सर दरवाजे पर एक मरे चूहे की भेंट होती थी.

फिर, एक दिन जब फलिंडा रास्ते पर आई, तो दरवाजे पर कोई बिल्ली उसका इंतज़ार नहीं कर रही थी.

"बिल्ली?" वो चिल्लाई. उसके मुंह और आँखों में नमकीन आंसूं थे, "बिल्ली!"

भूरे और काले रंग की बिल्ली मुंह में चूहा लेकर जंगल से तेजी से आई. उसने उसे फलिंडा के पैरों पर गिरा दिया. फलिंडा ने अपने आँसू पोंछे.

उसने दरवाजा खोला. "अंदर आओ," उसने कहा. बिल्ली आग के पास बैठ गई.

"ऊपर आओ," उसने कहा.

भूरे रंग की धारीदार बिल्ली उसकी गोद में कूद गई और मुड़कर बैठ गई और म्याऊँ करने लगी. उसकी भूरी आँखों ने ऊपर देखा और कहा, "मिआऊं!"

"छोटी घरेलू बिल्ली," सफेद चुड़ैल ने बिल्ली के धारीदार फर को सहलाते हुए कहा. उसे अपनी गोद में झिलमिलाती, धड़कती हुई गर्माहट महसूस हुई.

"मैं तुम्हें घरेलू बिल्ली बुलाऊंगी, बिल्ली."

अंत